सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

नहीं विराम नहीं.....

—डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका, सम्पूर्णा

यह मानव जीवन की अनोखी विडम्बना है कि जब तक जीवन है तब तक आराम नहीं। और शायद यही जीवन है। कल ही मीरा जब सड़क पर जा रही थी तो उसने एक ऐसे बुजुर्ग को देखा जिसकी कमर नीचे की ओर झुकी हुई थी, आंखें संसार को देखते—देखते जैसे बाहर को आ गईं थीं। हाथों में मांस, नाम को भी शेष नहीं रह गया था। वह बुजुर्ग व्यक्ति अपनी चाय की दुकान पर बैठा, अपना काम धीरे—धीरे कर रहा था। मीरा, क्षण भर को सहम सी गई थी। यह दृश्य उसके मन को झकझोर रहा था। मन में आया कि बुजुर्ग व्यक्ति से जाकर पुछूं कि आपके घर में क्या कोई और नहीं ह, जो इस दुकान पर बैठकर पैसा कमा सके और आप भी अपने घर पर रहकर आराम कर सको?

मीरा, छोटे—छोटे कदमों से पता नहीं कब, ठीक बुजुर्ग के सामने जाकर खड़ी हो गई। जब पास से जाकर देखा तो अनुभव हुआ कि वह बुजुर्ग कांपते हुए भी संयत, समर्थ और मुस्कुराता हुआ सा नजर आ रहा था। यह तो मीरा के लिए अत्यंत ही हर्ष का विषय था। मीरा ने कहा — बाबा, एक कप चाय मिलेगी? बाबा ने तुरंत उत्तर दिया—जरूर बेटा। आज का आलेख तो यहीं समाप्त हो जाता है। जीवन जीने की ललक और स्वाभिमान से जीने की चाह, मीरा को अंदर ही अंदर रोमांचित कर गई। बुजुर्ग व्यक्ति तन्मयता से चाय बना रहे थे और इस दुनिया

से बेखबर गाना गुनगुनाते हुए कभी चाय की पत्ती, तो कभी दूध, चाय के पानी में डाल रहे थे। छलनी से चाय को छानते हुए वे मीरा से बोले कि बेटा चीनी भी डालूं। मीरा, चाय में अक्सर चीनी नहीं पिया करती है। कह बैठी – हां बाबा, चीनी डाल दो। कुछ ही क्षणों में उन्होंने मीरा को एक कप चाय बनाकर दे दी। इस पूरे वृतांत में जिस विषय ने मीरा के मन को छू लिया वह था – जीवन से हार नहीं मानना। सड़कों पर, रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट पर चलते हुए हजारों लोग मानव जीवन की इसी सच्चाई को दर्शाते हैं। यदि यह जीवन मिला है, तो वह जीने के लिए है। और हंस कर जीने के लिए है। आंधी, तूफान और वर्षा सभी से मनुष्य संघषं करता है। और फिर विजयी होकर सम्राट भाव से यह जीवन जीता है। मीरा सोच रही थी कि कैसे आज के युवाओं के पास जाकर वह यह संदेश पहुंचाएं कि शराब और नशे में उलझ कर अपने बेशकीमती जीवन को बर्बाद न करें। अगर विश्लेषण करें तो पाएंगे कि संघर्ष ही जीवन है। बिना कंटक, यह जीवन वास्तव में निराशा से भरा होता है। यही कारण है कि अमेरिका जैसे राष्ट्र में जहां बुनियादी सुविधाओं की कोई कमी नहीं है, वहां युवा वर्ग पथ भ्रमित हो अपराध, हिंसा और नशाखोरी में डूब गया है। पूर्व की इस मिट्टी ने हमेशा ही जगत को अध्यात्म की राह दिखाई है और इस मानव को कम साधनों में खुश रहना सिखाया है। मीरा, आज सम्पूर्णा जाकर नव यौवना छात्राओं को अवश्य ही इस विषय पर चर्चा करेगी। आप भी चर्चा करें।

.....